

जय जय जनक सुनन्दिनी हरि वन्दिनी हे आरती लिरिक्स



जय जय जनक सुनन्दिनी, हरि वन्दिनी हे,
दुष्ट निकंदिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।

सकल मनोरथ दायनी, जग सोहिनी हे,
पशुपति मोहिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।

विकट निशाचर कुंधिनी, दधिमंधिनी हे,
त्रिभुवन ग्रंथिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।

दिवानाथ सम भासिनी, मुख हासिनि हे,
मरुधर वासिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।

जगदंबे जय कारिणी, खल हारिणी हे,
मृगरिपुचारिणी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।

पिपलाद मुनि पालिनी, वपु शालिनी हे,
खल खलदायनी मात जय जय विष्णु प्रिये।bd।

तेज – विजित सोदामिनी, हरि भामिनी हे,
अहि गज ग्रामिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।

घरणीधर सुसहायिनी, श्रुति गायिनी हे,
वांछित दायिनी मात जय जय विष्णु प्रिये।bd।

जय जय जनक सुनन्दिनी, हरि वन्दिनी हे,
समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल
दुष्ट निकंदिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये।bd।
एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>

